संत ज़ेवियर सीनियर सेकेण्डरी विद्यालय, दिल्ली – 54

कक्षा–10 एस. ए. 2 – 2015 – 16

पूर्णांक–90

दिनाँक–18.3.2016 हिन्दी समय–3 घंटे

निर्देशः– 1. इस प्रश्न पत्र के चार खंड हैं – क, ख, ग, घ।

2. चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

3. उत्तर के प्रत्येक विकल्प को चुनकर शब्दों में भी लिखिए।

खण्ड 'क'

I. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए उपयुक्त विकल्प चुनकर उत्तर शब्दों में ही लिखिए – (1x5=5)

कर्मभीरू मनुष्य काम करने से डरता है, काम को देखकर भयभीत होता है। वह परान्न और पराश्रय पर अपना जीवन निर्वाह करता है। स्वावलंबन और आत्म–निर्भरता उससे कोसों दूर खड़ी रहती है। न उसमें उनके आवाह्न की शक्ति होती है और न आदर की। क्या आपने कभी सोचा है कि इस प्रकार के कर्मभीरू मानव के पुरूषार्थ और शक्ति को उससे किसने छीन लिया? वह अकर्मण्य क्यों बन बैठा? उदासी ने उसके जीवन में घर क्यों बना लिया? इन सब प्रश्नों का आप केवल एक ही उत्तर पाएँगे कि उसके सुनहरे जीवन को आलस्य रूपी कीटाणुओं ने खोखला बना दिया है। आलस्य मानव–जीवन का सबसे बड़ा शत्रु है जो उसकी समस्त सृजनात्मक और रचनात्मक शक्तियों को छीनकर उसे मिट्टी का लौंदा बना देता है।

1. कर्मभीरू कौन है?

i. जो कर्म करने से डरता है। ii. जो कायर है।

iii. जिसमें शक्ति नहीं होती। iv. जो कर्म करने में विश्वास करता है।

2. कर्मभीरू पराश्रय का जीवन निर्वाह क्यों करता है?

i. उसमें आवाह्न की शक्ति होती है। ii. स्वावलंबन की भावना होती है।

iii. आत्मनिर्भरता व आदर की भावना नहीं होती। iv. वह वीर व साहसी है।

3. आलस्य मानव–जीवन का सबसे बड़ा शत्रु है, क्योंकि –

i. यह जीवन को खोखला नहीं बनाता है। ii. मनुष्य को काम से भयभीत करता है।

iii. मनुष्य की सृजनात्मक और रचनात्मक शक्तियों को छीन लेता है।

iv. आलस्य जीवन को सुंदर बना देता है।

4. 'कर्मण्य' का विलोम है –

i. कर्मभीरू ii. अकर्मण्य iii. आलसी iv. डरपोक

5. किस विकल्प के सारे शब्द तत्सम हैं?

i. कर्मभीरू, काम, भयभीत ii. मानव, पुरूषार्थ, सुनहरा

iii. भयभीत, उदासी, खोखला iv. परान्न, पराश्रय, आलस्य

II. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए उपयुक्त विकल्प चुनकर उत्तर शब्दों में लिखिए – (1x5=5)

दूसरे हमारी क्षमता पर विश्वास करें और हमारी सफलता को निश्चित मानें, इसके लिए आवश्यक शर्त यह है कि हमारा अपनी क्षमता और सफलता में अखंड विश्वास हो। हमारे भीतर भय, शंका और अधैर्य ऐसे डायनामाइट हैं जो हमारे प्रति दूसरों के विश्वास को खंडित कर देते हैं। हमारे विद्यालय में, जो नगर से दूर जंगल में था, चौदह वर्ष का एक बालक अपने घर से अकेला पढ़ने आया करता था। कुछ महीने बाद दूसरा बालक भी उसके साथ आने लगा। वह दूसरा बालक बहुत डरपोक था। वह भूतों और चोरों की कहानियाँ उसे सुनाया करता । इसका ऐसा प्रभाव पड़ा कि पहला बालक भी डरपोक हो गया और वे दोनों मेरी प्रतीक्षा करते रहते कि मैं चलूँ, तो वे भी मेरे साथ चलें।

सूत्र यह बनता है – हतोत्साहियों, डरपोकों और सदा असफलता की ही मर्सिया पढ़ने वालों के संपर्क से दूर रहो। नीति का वचन है कि जहाँ अपनी, अपने कुल की और अपने देश की निंदा हो और उसका मुँहतोड़ उत्तर देना संभव न हो, तो वहाँ से उठ जाना चाहिए। क्यों? क्योंकि इसमें आत्मगौरव और आत्मविश्वास की भावना खंडित होने का भय रहता है।

1. दूसरे लोग हमारी सफलता और क्षमता पर कब विश्वास करने लगते हैं?

i. जब हम अपनी बातों से उन पर प्रभाव जमा लेते हैं।

ii. जब हमारे प्रति उनमें अखंड विश्वास जाग उठता है।

iii. जब हम दूसरों के सामने खूब परिश्रम करते हैं।

iv. जब हमारा अपनी क्षमता और सफलता पर विश्वास हो।

2. भय, शंका और अधैर्य को डायनामाइट क्यों कहा गया है?

   i. क्योंकि वे विस्फोट जैसे प्रभावी होते हैं।

   ii. क्योंकि ये हमारे प्रति दूसरों के विश्वास को खंडित करते हैं।

   iii. क्योंकि ये विश्वास खंडन करने के बाद सृजन करते हैं।

   iv. इनमें से कोई नहीं।

3. जहाँ अपने कुल, देश आदि की निंदा हो, वहाँ से क्यों उठ जाना चाहिए?

   i. अपने कुल और देश की निंदा सुननी चाहिए।

   ii. निंदक की बातों को उसका स्वभाव समझ लेना चाहिए।

   iii. इससे हमारा आत्मगौरव और आत्मविश्वास बढ़ जाता है।

   iv. इससे हमारा आत्मगौरव और आत्मविश्वास खंडित हो सकता है।

4. इस गद्यांश से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

   i. हमें अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए।

   ii. हमें कायरों तथा असफलता का गुणगान करने वालों से दूर रहना चाहिए।

   iii. हमें निराशावादियों का उत्साह बढ़ाना चाहिए।

   iv. हमें हतोत्साहियों तथा निराशावादियों को अपना मित्र बनाना चाहिए।

5. ''इसका ऐसा प्रभाव पड़ा कि पहला बालक भी डरपोक हो गया'' – वाक्य है –

   i. सरल वाक्य ii. मिश्रित वाक्य iii. संयुक्त वाक्य iv. समुच्चयबोधक वाक्य

III. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर शब्दों में लिखिए। (1x5=5)

ले चल नाविक मँझधार मुझे, दे–दे बस अब पतवार मुझे,

इन लहरों के टकराने पर आता रह–रहकर प्यार मुझे।

मत रोक मुझे, भयभीत न कर, मैं सदा कँटीली राह चला,

मेरे पथ के पतझारों में ही नव–नूतन मधुमास पला।

मैं हूँ अबाध, अविराम, अथक, बंधन मुझको स्वीकार नहीं –

मैं नहीं, अरे, ऐसा राही जो बेबस–सा मन मार चला।

दोनों ही ओर निमंत्रण है – इस पार मुझे, उस पार मुझे।

रंगीन विजय–सी लगती है, संघर्षों में हर हार मुझे।

मैं हूँ अपने मन का राजा, इस पार रहूँ, उस पार चलूँ,

मेरी पतवारों पर साथी! लहरों की घात नहीं चलती –

मेरी तो आदत ही ऐसी – संघर्ष बीच हर बार चलूँ।

1. राही नाविक से क्या आग्रह करता है?

   i. लहरों में टकराने के लिए न छोड़ दे। ii. मन का राजा बना रहने दे।

   iii. उसे मँझधार में ले जाए और उसे पतवार थमा दे। iv. बेबस सा मन मारकर चलने दे।

2. 'रंगीन विजय–सी लगती है, संघर्षों में हर हार मुझे' का अर्थ है –

   i. कवि को लड़ने में मजा नहीं आता है। ii. वह विजय को रंगीन मानता है।

   iii. संघर्ष करते हुए हार भी जाए तो जीत जैसा मज़ा आता है। iv. वह हार से घबराता है।

3. प्रस्तुत कविता में कौन–सा रस है?

   i. हास्य रस ii. करूण रस iii. वीर रस iv. भक्ति रस

4. सागर का पर्यायवाची शब्द है –

   i. मधुमास ii. पतवार iii. विप्लव iv. पारावार

5. 'रंगीन <u>विजय–सी</u> लगती है, संघर्षों में हर हार मुझे' रेखांकित में अलंकार है –

   i. अनुप्रास ii. अंत्यानुप्रास iii. उपमा iv. यमक

IV. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर शब्दों में लिखिए। (1x5=5)

गति प्रबल पैरों में भरी,

फिर क्यों रहूँ दर–दर खड़ा।

जब आज मेरे सामने –

है, रास्ता इतना पड़ा।

जब तक न मंज़िल पा सकूँ, जब तक मुझे न विराम है।

चलना हमारा काम है, राही हमारा नाम है।

इस विशद विश्व–प्रवाह में, किसको नहीं बहना पड़ा।

सुख–दुख हमारी ही तरह, किसको नहीं सहना पड़ा।

फिर व्यर्थ क्यों कहता फिरूँ, मुझ पर विधाता वाम है।

चलना हमारा काम है, राही हमारा नाम है

मैं पूर्णता की खोज में,

दर–दर भटकता ही रहा।

फिर क्यों निराशा है मुझे? जीवन इसी का नाम है,

राही हमारा नाम है, चलना हमारा काम है।

1. कवि के पास ऐसा क्या है, जिससे उसके लिए रास्ते पर आगे बढ़ना आवश्यक हो गया है?

   i. उसका लक्ष्य अभी उसे मिला है।
   ii. उसके पैरों में प्रबल गति नहीं भरी है।
   iii. उसका नाम राही है, अतः उसे चलना ही है।
   iv. वह श्रम नहीं करना चाहता है।

2. कवि कब तक विश्राम नहीं लेना चाहता?

   i. जब तक उसे मंज़िल न मिल जाए
   ii. जब तक विश्व का प्रवाह रूक न जाए।
   iii. जब तक विधाता उस पर वाम न हो।
   iv. जब तक उसे निराशा न हो।

3. 'मुझ पर विधाता वाम (विरूद्ध) है' – कवि को ऐसा कहना व्यर्थ क्यों लगता है –

   i. विधाता सभी पर वाम (विरूद्ध) रहता है।
   ii. कोई भी मंज़िल प्राप्त नहीं कर पाता।
   iii. उसके पैरों में गति है।
   iv. सभी को सुख–दुख सहन करना पड़ता है।

4. कवि क्या पाने के लिए भटक रहा है –

i. सुख ii. विश्व–प्रवाह iii. पूर्णता iv. गति

5. 'विराम' से तात्पर्य है –

i. रूकना ii. शांति iii. आराम iv. निराशा

खण्ड 'ख'

V. रेखांकित पदों की दो–दो विशेषताएँ लिखिए (पद परिचय) – (1x4=4)

1. गणतंत्र दिवस पर लाल किले पर राष्ट्रीय ध्वज लहराया गया।
2. जल्दी चलो गाड़ी जाने ही वाली है।
3. मैं कल बीमार था इसलिए गाँव नहीं गया।
4. किसी विद्वान से बातचीत करने से ज्ञान बढ़ता है।

VI. निम्नलिखित में निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए – (1x4=4)

1. बच्चों से शांत नहीं रहा जा सकता। (कर्तृवाच्य में बदलिए)
2. राजा द्वारा प्रजा को कष्ट दिए गए। (कर्तृवाच्य में बदलिए)
3. लड़कों ने विद्यालय साफ किया। (कर्मवाच्य में बदलिए)
4. उठो–ज़रा घूमें। (भाववाच्य में बदलिए)

VII. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए – (1x3=3)

1. सड़क पार करता हुआ एक व्यक्ति बस से टकराकर मर गया। (मिश्रित वाक्य में बदलिए)
2. जो विद्यार्थी बहुत परिश्रम करते हैं वे ही परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करते हैं। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)
3. बिल्ली झाड़ियों में छिपकर बैठ गई और कुत्ते के जाने की प्रतीक्षा करने लगी। (सरल वाक्य में बदलिए)

VIII. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए – (1x4=4)

1. अवधि अघार आस आवन की
   तन मन विथा सही
2. कौरवों का श्राद्ध करने के लिए,
   या कि रोने को चिता के सामने,
   शेष अब है रह गया कोई नहीं,
   एक वृद्धा, एक अंधे के सिवा।

निम्नलिखित पंक्तियों में कौन–सा रस है लिखिए।

3. रौद्र रस **या** वात्सल्य रस का उदाहरण लिखिए।
4. हास्य रस **तथा** वीभत्स रस के स्थायी भाव लिखिए।

खण्ड 'ग'

IX. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

स्त्रियों का किया हुआ अनर्थ यदि पढ़ाने का ही परिणाम है तो पुरूषों का किया हुआ अनर्थ भी उनकी विद्या और शिक्षा का ही परिणाम समझना चाहिए। बम के गोले फेंकना, नरहत्या करना, डाके डालना, चोरियाँ करना, घूस लेना – ये सब यदि पढ़ने–लिखने का ही परिणाम हो तो सारे कॉलिज, स्कूल और पाठशालाएँ बंद हो जानी चाहिए। परंतु विक्षिप्तों, बात व्यथितों और ग्रहग्रस्तों के सिवा ऐसी दलीलें पेश करने वाले बहुत ही कम मिलेंगे। शकुंतला ने दुष्यंत को कटु वाक्य कहकर कौन–सी अस्वाभाविकता दिखाई? क्या वह यह कहती कि – ''आर्य पुत्र, शाबाश! बहुत अच्छा काम किया जो मेरे साथ गांधर्व विवाह करके मुकर गए। नीति, न्याय, सदाचार और धर्म की आप प्रत्यक्ष मूर्ति हैं।'' पत्नी पर घोर से घोर अत्याचार करके जो उससे ऐसी आशा रखते हैं – वे मनुष्य–स्वभाव का किंचित भी ज्ञान नहीं रखते।

1. पाठ और लेखक का नाम लिखिए। (1)
2. पढ़े–लिखे पुरूषों द्वारा कौन–कौन से असामाजिक कार्य किए जाते हैं? (2)
3. गद्यांश के आधार पर दो शैलीगत विशेषताएँ उदाहरण सहित लिखें। (2)

X. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए। (लगभग 60 शब्दों में) (2x5=10)

1. लेखिका मन्नू भंडारी की अपने पिता से वैचारिक टकराहट को किन्हीं दो उदाहरणों द्वारा स्पष्ट कीजिए।

2. वास्तविक अर्थों में संस्कृत व्यक्ति व सभ्य व्यक्ति में क्या अंतर है, उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

3. 'स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होता है' – इस कुतर्क का खंडन द्विवेदी जी ने किस प्रकार किया है? किन्हीं दो तर्कों को उदाहरण देकर समझाएँ।

4. पाठ में आए किन प्रसंगों के आधार पर आप कह सकते हैं कि बिस्मिल्ला खाँ वास्तविक अर्थों में सच्चे इंसान थे? (कोई दो उदाहरण दें)

5. ''मानव संस्कृति एक अविभाज्य वस्तु है।'' कब–कब मानव संस्कृति ने अपने एक होने का प्रमाण दिया, किन्हीं दो उदाहरणों से अपनी बात को स्पष्ट कीजिए।

XI. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए –

बाल ब्रह्मचारी अति कोहि। बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही।

भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुलबार महिदेवन्ह दीन्ही।।

सहसबाहु भुज छेद निहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा।।

मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीस किसोर।

गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर।।

1. कवि और कविता का नाम लिखिए। (1)

2. परशुराम अपने फरसे के बारे में क्या–क्या बताते हैं? (2)

3. परशुराम की किन्हीं दो चारित्रिक विशेषताओं को उदाहरण सहित लिखिए। (2)

XII. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए – (लगभग 60 शब्दों में) (2x5=10)

1. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन–कौन से तर्क दिए? संक्षेप में कोई चार तर्क दीजिए।

2. कवि ने प्रभुता को मृगतृष्णा के समान क्यों बताया है? कविता 'छाया मत छूना' के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

3. 'कन्यादान' कविता के आधार पर लिखिए कि माँ ने बेटी की विदाई के समय क्या–क्या सीख दी? कोई चार सीखें लिखिए।

4. संगतकार किन–किन रूपों में मुख्य गायक की सहायता करता है? किन्हीं चार रूपों को संक्षेप में लिखिए।

5. संगतकार कविता हमें क्या संदेश देती है?

XIII. दुलारी और टुन्नू के प्रेम के पीछे उनका कलाकार मन और उनकी कला थी। यह प्रेम दुलारी को देश–प्रेम तक कैसे पहुँचाता है? एक ज़िम्मेदार नागारिक हाने के नाते आप देश के प्रति अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह कैसे करेंगे? कोई तीन उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए। (5)

अथवा

लेखक ने अपने आपको हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता कब और किस तरह महसूस किया? लेखक ने हिरोशिमा पर कविता कब लिखी? इसी तरह की किसी आपदा के समय एक ज़िम्मेदार नागरिक होने के नाते आप समाज में अपना योगदान कैसे देंगे? किन्हीं तीन उदाहरणों से स्पष्ट कीजिए।

खण्ड 'घ'

XIV. निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखिए – (10)

1. राष्ट्र का सम्मान है तो हमारी भी पहचान है→ राष्ट्र–व्यक्ति के सम्मान का प्रतीक – हमारे कर्त्तव्य – देश के प्रति प्रेम – असामाजिक तत्त्वों पर विजय, ज़िम्मेदार नागरिक बनें।

अथवा

2. सत्संगति सब विधि हितकारी ⟶ सत्संगति का अर्थ – सुसंगति और कुसंगति के अच्छे बुरे परिणाम – सत्संगति हितकारी कैसे – सुसंगति की प्राप्ति और कुसंगति को छोड़ने के उपाय – सुसंगति सब सुखों का मूल।

अथवा

3. राजनीति और भ्रष्टाचार ⟶ प्राचीन स्वरूप, वर्तमान स्थिति – सत्ता की होड़ – भ्रष्ट आचरण का बोलबाला, उपाय।

XV. बस–कंडक्टर के सहानुभूतिपूर्ण और विनम्र व्यवहार की प्रशंसा करते हुए **परिवहन–निगम के प्रबंधक** को पत्र लिखिए। (5)

अथवा

नैनीताल के सैर–सपाटे के दौरान एक स्थानीय विद्यार्थी **आनंद** से आपकी मित्रता हो गई। उसने पर्वतीय प्रदेश के जनजीवन से भी आपका परिचय करवाया। अपने घर लौट आने पर उस मित्र का आभार व्यक्त करते हुए उसे पत्र लिखिए।

XVI. निम्नलिखित गद्यांश का **एक तिहाई** शब्दों में सार लिखते हुए उसका उचित **शीर्षक** भी लिखिए – (5)

नारी नर की शक्ति है। वह माता, बहिन, पत्नी और पुत्री आदि रूपों में पुरूष में कर्त्तव्य भावना जगाती है। वह ममतामयी है किंतु चोट खाकर वह अत्याचार के विरूद्ध खड़ी हो जाती है तो वह वज्र से भी कठोर हो जाती है। तब वह न माता रहती है, न प्रिया, उसका एक ही रूप होता है और वह रूप होता है, दुर्गा का। वास्तव में नारी सृष्टि का ही रूप है, जिसमें सभी शक्तियाँ समाहित हैं इसलिए नारी के अपमान का अर्थ होगा – समाज का अपमान। कहा भी गया है जहाँ नारी का सम्मान होता है वही समाज प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है इसलिए नारी जाति का सम्मान करो तभी समाज उन्नत होगा।

1. प्रस्तुत गद्यांश का उपयुक्त **शीर्षक** लिखिए। (1)

2. प्रस्तुत गद्यांश का सार ए**क तिहाई** शब्दों में लिखिए। (4)

*****